Alliance for Behaviour Change
Chhattisgarh

unicef
for every child

अलायंस फॉर बिहेवियर चेंज

सफलता की कहानियाँ

पारस

स्थल: बंधनपुर, कापू (रायगढ़)

संपर्क: 9479060139

कार्यक्षेत्र:

- बालिका शिक्षा
- पाठ्येतर एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

बालिका शिक्षा, पाठ्येतर एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा

चुनौतियाँ:

सांस्कृतिक एवं पाठ्येतर विषयों में जागरूकता की कमी।

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

मनीषा यादव कापू क्षेत्र के बंधनपुर गांव में अपने परिवार, जिसमें गृहिणी माता, कृषक पिता, बहन व अध्ययनरत भाई हैं, के साथ रहती है। मनीषा पढ़ाई में तेज़, चंचल व जिज्ञासु स्वाभाव की है। वह पढ़ाई के साथ साथ नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी रुचि रखने वाली बालिका है, लेकिन उसकी यह रुचि उसके माता-पिता को नहीं भाती थी। यह बात मनीषा को काफी परेशान करने लगी थी। मनीषा को एक दिन उसके इम्पैक्ट पारस बालिका शिक्षा केंद्र की अनुदेशिका ने परेशान देख परेशानी का कारण पूछा, तब उसने अपनी पूरी बात बताई। तब अनुदेशिका ने मनीषा के माता-पिता को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के व्यापकता जैसे विषयों पर जागरूक किया और मनीषा को अपने नृत्य की रुचि को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित भी किया। इस प्रोत्साहन से मनीषा ने अपने केंद्र में गणतंत्र दिवस समारोह में नृत्य प्रस्तुति भी दी, जिसे देखकर उसके माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए और फिर उन्होंने भी उसे प्रोत्साहित किया। इन सभी का प्रोत्साहन पाकर मनीषा ने अपने गांव में आयोजित एक नृत्य प्रतियोगिता में भी भाग लिया एवं उस प्रतियोगिता को जीतकर सभी को गौरवान्वित किया। इस तरह उसने इम्पैक्ट पारस बालिका शिक्षा केंद्र की सहायता से अपना सपना पूरा किया।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- गणतंत्र दिवस जैसे समारोहों में बच्चों की भागीदारी बढ़ाकर विभिन्न रुचियाँ जागृत करना।
- बच्चों की रुचियों को आगे बढ़ाने के लिए उनसे एवं उनके माता-पिता से परामर्श करना।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- सांस्कृतिक एवं पाठ्येतर विषयों में जागरूकता फैलाई।
- बालिकाओं को उनके सपने पूरे करने की राह दिखाई।
- बालिका शिक्षा का प्रसार।

सीख एवं सुझाव:

- बच्चों को उनकी रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने देना चाहिये।
- उन्हें प्रोत्साहित करते हुए उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति भी करनी चाहिए।
- इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु समाज के सभी लोगों को अपनी क्षमता अनुसार प्रयास करते रहना चाहिए।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

अरपा अर्पण महाअभियान एवं जनआंदोलन

स्थल: बिलासपुर

संपर्क: 7803010115

कार्यक्षेत्र:

- पौधारोपण
- जल संरक्षण
- जलवायु संरक्षण

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

अरपा अर्पण महाअभियान एवं जनआंदोलन - 23 मई 2024 (बिलासपुर)

चुनौतियाँ:

वृक्षों की कटाई, पौधारोपण के प्रति उदासीनता, नदी में व्याप्त गन्दगी और इससे उत्पन्न की वजह से ऊष्मता में बढ़ोतरी से पर्यावरणीय असंतुलन

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

बिलासपुर की जीवनदायिनी अरपा नदी के सन्निकट क्षेत्रों में वृक्षों की कटाई, पौधारोपण के प्रति उदासीनता, नदी में व्याप्त गन्दगी से चौतरफा विकास प्रभावित होता आ रहा था। इससे बदलते मौसम चक्र, दूषित जलवायु, बढ़ते प्रदूषण, रेत उत्खनन के दुष्परिणाम, नदी में हो रही गंदगी, शहरों कस्बों के गंदे पानी का इसमें मिलने से प्रदूषित जल और अन्य ऐसे कई कारक, जो अरपा को अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिए मजबूर कर रहा है।

इससे संवेदित होकर अरपा अर्पण महाअभियान एवं जनआंदोलन संस्था समाज में इसके निदान के लिये बैठक करनी शुरू की। मुहल्लों और कस्बों में 8 - 12 लोगों के बीच सैकड़ों बैठकें की। इन सारी बैठकों में पौधारोपण और उसकी सिंचाई सुनिश्चित करना, रेत उत्खनन के विरुद्ध जागरण और नाली के पानी को नदी में नहीं डालने के प्रति मानस तैयार किया।

संस्था ने इसके साथ-साथ समाज के प्रभावित लोगों को इसमें शामिल करके उनका प्रबोधन कराया। अरपा नदी के अंदर एवं तट की सफ़ाई समुदाय के साथ मिलकर किया। साथ ही संस्था अपने संस्थागत संसाधनों के द्वारा पानी की कमी दूर करने के लिए टैंकर एवं जलयान की व्यवस्था और पंपहाउस निर्माण किया ।

अब इलाकाई क्षेत्रों में हरे-भरे पेड़ पौधे, उसकी रक्षा के लिए लोगों का उत्साह, नदी के गन्दगी में आई कमी से न सिर्फ वातावरण में गर्मी से राहत बल्कि क्षेत्रों में ऑक्सीजन में बढ़ोतरी और लोगों में इस अभियान के प्रति सामूहिक समर्पण दिखना उत्तरोत्तर जारी है।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- छोटी क्लस्टर बैठक और उसमें प्रतिव्यक्ति समर्पण का जागरण।
- वृक्षारोपण और नदी सफाई में जन-भागीदारी सुनिचित करना।
- शहर के प्रभाववशाली लोगों से सहयोग।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- समाज के लोगो में नदी साफ़ रखने और पौधा संरक्षण की स्थायी समाधान की सीख विकसित हुई।
- समाज के लोगों में पर्यावरण के प्रति एकजुटता आई।

सीख एवं सुझाव:

- विविध समाज में रहनेवाले लोगों के बिच काम करने के दौरान रणनीतियों के निर्माण की समझ विकसित हुई।
- इस अभियान में सरकारी सहयोग की सहभागिता नहीं कराने को आगामी रणनीति में शामिल करने का लक्ष्य।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

दंतेश्वरी रूरल डेवलपमेंट सोसायटी

स्थल: नारायणपुर

संपर्क: 906074515, 7067219170

कार्यक्षेत्र:

- शिक्षा एवं रोजगार सृजन
- महिला सशक्तिकरण

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

प्रशिक्षण ने बदली 80 युवाओं की जीवन शैली

चुनौतियाँ:

- शिक्षा का अभाव
- रोजगार के अवसर पर दृष्टि नहीं होने से आर्थिक सामाजिक विकास अवरुद्ध

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

शिक्षा के अभाव को रोजगार सृजन के प्रति जागरूकता नहीं होने से युवाओं का शिक्षा के प्रति रुचि निरंतर गिरता जा रहा था। इससे घर मे अशांति और बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही थी साथ ही क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति में गिरावट आ रही थी । इस समस्या को दृष्टि में लेते हुए दंतेश्वरी रूरल डेवलपमेंट सोसायटी ने इसके समाधान के लिए संवेदित हुई।

संस्था ने पहले सर्वे किया और इसके द्वारा वर्ष 2011-12 में आईएपी योजना के तहत लगभग 150 युवाओं को राजमिस्त्री का प्रशिक्षण दिया। इसमें से कुल 80 युवा लगन से कार्य कर 15 से 20 हजार रूपये हर महीने आर्थिक उपार्जन प्राप्त करने लगे। परंतु इससे वह आशातीत सफलता नहीं मिली जिसका लक्ष्य संस्था ने लिया था । फिर संस्था ने वर्ष 2022 में रोजगारपरक इस प्रशिक्षण में "वैल्यू ऐड " करते हुए इसे और तकनीकी रूप दिया । राष्ट्रीय स्पर्धा को स्वीकार किया । इसके लिए इस संस्था ने छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार मण्डल से चर्चा की । इससे रोजगार मूलक कला में परिवर्तन आया । इससे वे अधिक कुशल हुए। अब गाँव के कई युवाओं का उनके जीवन में सुधार प्रारम्भ हुआ है, परिवार की आर्थिक स्तिथि में सुधार हुआ है। वर्ष 2023 के नवंबर माह में इन परिवारों का आर्थिक सर्वेक्षण किया गया । इसके अनुसार वर्ष 2022 में जहां इन परिवारों कि औसत मासिक आमदनी प्रति व्यक्ति प्रति माह आय महज 6050 थी जो अब बढ़कर 524.25 रु प्रति व्यक्ति प्रति दिन के दर से 15428 रु प्रति माह हो गयी है।

इससे उत्साहित होकर संस्था की प्रबंधन समिति ने महिला समूहों को मशरूम उत्पादन, बांसकला, मुर्गी पालन, अगरबत्ती निर्माण आदि कार्यों का प्रशिक्षण देकर महिला सशक्तिकरण से जोड़ने का प्रयास प्रारम्भ किया है। इससे परिवार के आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान बढ़ा है

सीख, रणनीत और सुझाव:

- लक्षित क्षेत्र का सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण
- लक्षित वर्ग के क्षमता का आंकलन और उसके अनुसार विधा का चयन ताकि वे उस विधा में पारंगत हो
- इसमें स्थानीय सरपंच और छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार मण्डल से सहयोग
- अब आवश्यकता है कि इन्हे उच्च तकनीकि युक्त प्रशिक्षण के साथ बड़ा बाजार उपलब्ध कराना ।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- युवाओं को उनकी रुचि और क्षमताओं के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया है, जिससे उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता मिली है।
- महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर महिला सशक्तिकरण के माध्यम से उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से स्वतंत्र बनाने का प्रयास किया गया है।
- महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षित कर महिला सशक्तिकरण के माध्यम से उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से स्वतंत्र बनाने का प्रयास किया गया है।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

जीवदया फाउंडेशन एवं जन-कल्याण सामाजिक संस्थान

स्थल: मोहला मानपुर चौकी

संपर्क: 9424112310

कार्यक्षेत्र:

- पोषण
- शिक्षा एवं जागरूकता

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

कुपोषण के प्रति जागरूकता अभियान चलाया

चुनौतियाँ:

- स्थानीय समुदाय की जागरूकता और सहयोग की कमी
- सामुदायिक सहभागिता
- कुपोषण की समस्या

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

जीवदया फाउंडेशन एव जन कल्याण सामाजिक संस्थान राजनांदगाँव के सयुक्त तात्वधान में मिल्क प्रोजेक्ट कार्यक्रम अंर्तगत छत्तीसगढ़ राज्य के आदिवासी एवं नक्सली प्रभवित जिला मोहला मानपुर-चौकी के विकासखंड मुख्यालय मानपुर से महज 15 से 18 किमी की दूरी में बसा ग्राम चावरगाँव के आगनबाड़ी केंद में 6 माह से 5 वर्ष बच्चों को कुपोषण दूर करने के लिए ऊपरी आहार दी जा रही है। रागनी बोगा गंभीर कुपोषित की श्रेणी में थी और परिवार के सदस्य जीविकोउपार्जन के कार्यों में व्यस्तता होने के कारण बच्ची को बड़े भाई की देखरेख में छोड़ कर दिनभर के लिए जंगल या खेती बाड़ी में लगे रहते थे। और आगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा केंद मे ऊपरी आहार के लिए बार बार बुलाने पर भी पालक बच्चे को ले कर नहीं जाते थे। फिर सस्थान के कार्यकर्ता प्रतिदिन बच्चों को सुबह कम्यूनिटी सेंटर में 6 नग बिस्किट और 150 ग्राम दूध दी जाने लगी। और 3 से 5 वर्ष के बच्चों को अनौपचारिक शिक्षा खेल खेल में दी जा रही है। इस का प्रभाव देखने को मिलेगा की कैद में बच्चों की दैनिक उपस्थिति बढ़ी और गभीर एव माध्यम कुपोषित बच्चों की संख्या में कमी हुई।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- माता - पिता को उनके बच्चो की गंभीर समस्या के बारे में अवगत कराना
- नक्सली इलाको में पोषक आहार उपलब्ध करवाना

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- माता - पिता ने अपने बच्चो को आँगनबाड़ी ले जाना शुरू किया
- माता-पिता ने अपने बच्चो की कुपोषण जैसी समस्या को समझ कर उसके प्रति कार्य करना शुरू किया
- समाज को कुपोषण से मुक्ति हेतु प्रयास किया जा रहा है

सीख एवं सुझाव:

- इससे लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने क्षमता अनुसार समाज कल्याण हेतु प्रयास करना चाहिए
- अपने आस पास के लोगों को देख कर उनकी मदद करनी चाहिए

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

कल्याणी सोशल वेलफेयर एंड रिसर्च आर्गेनाईजेशन

स्थल: सुपेला, भिलाई नगर

संपर्क: 07882292114

कार्यक्षेत्र:

नशामुक्ति एवं जागरूकता

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

चुनौतियाँ:

- नशा मुक्ति के प्रति जागरूकता की कमी
- नशे की आसानी से उपलब्धता
- महिला, बच्चे, बुजुर्गों पर सर्वाधिक नशे से दुष्प्रभाव

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

मरीज का नाम मोहन (बदला हुआ), उम्र 36 साल है। मोहन ने नशे (शराब) की शुरुआत दोस्तों के साथ सिर्फ और सिर्फ मजे के लिए किया था। परंतु उसे नहीं पता था कि वह नशे के इस दल-दल में फंस चुका है। नशे के चलते इनका शिक्षा, शरीर, परिवार, पैसा हर एक चीज बर्बाद हो गया। तब परिवार को कल्याणी नशा मुक्ति केंद्र के बारे में पता चला। उपचार के दौरान भी मोहन कई बार परिवार व नशा मुक्ति केंद्र की बातों को नजरअंदाज कर पुनः नशा करना शुरू कर देता था। परंतु 08 माह पूर्व मोहन नशा मुक्ति केंद्र पुनः आया और इस बार उसने उपचार में पूरा सहयोग किया। उसने संस्था के निर्देशक से निवेदन किया कि मुझे यही काम दे दो ताकि मैं नशा मुक्त रह सकूं। आज मोहन कल्याणी संस्था द्वारा संचालित नशा मुक्ति केंद्र में समन्वयक सह परामर्श दाता के पद पर कार्य करते हुए दूसरे साथियों को नशा मुक्ति की और प्रेरित कर रहा है।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- लोगों को नशा मुक्ति के प्रति जागरूक करना
- लोगों को नशे से होने वाली गंभीर समस्या से अवगत कराना

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- 1. संस्था के अथक प्रयासों से समुदाय, विभिन्न सामाजिक संगठन, आध्यात्मिक व शैक्षणिक- संगठन यूनियन नशे जैसे ज्वलनशील संवेदनशील मुद्दे पर चर्चा करने लगे।
- 2. समुदाय में नशे के उपचार हेतु जागरूकता बढ़ी।
- 3. नशे से पीड़ित व्यक्तियों को उपचार के पश्चात समाज की मुख्य धारा में शामिल किया गया।
- 4. संस्था द्वारा युवाओं को प्रेरित कर नशा मुक्ति जागरूकता अभियान हेतु कल्याणी फाइटर्स समूह का निर्माण किया गया जो की सक्रियता से भागीदारी निभा रही है।
- 5. नशामुक्त हो रहे लोगो द्वारा अवैध मादक पदार्थों की जानकारी देना.

सीख एवं सुझाव:

- नशा एक मानसिक बीमारी के साथ-साथ पारिवारिक सामाजिक और आर्थिक बीमारी भी है। इस संवेदनशील व ज्वलनशील विषय पर व्यापक तौर पर शासन, प्रशासन, सामाजिक संगठन, समुदाय और विशेष तौर पर युवाओं को एक मंच पर संगठित होकर संयुक्त रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

साबुन बैंक चलाकर स्कूली शिक्षक ने दिया हैंड वाश को बढ़ावा

स्थल: सकरेली बा, सक्ती

संपर्क: 7568870487

कार्यक्षेत्र:

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

साबुन बैंक चलाकर स्कूली शिक्षक ने दिया हैंड वाश को बढ़ावा

चुनौतियाँ:

शारीरिक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए हाथ धोने जैसे विषय में जागरूकता की कमी

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

किसी खास उद्देश्य हेतु लिए गए संकल्प में चाहे लाखों सीमाएं बनाई जाए परंतु एक संकल्पित व्यक्ति बिना व्यवस्था को बिगाड़े नई व्यवस्था का निर्माण कर सकता है। इस ध्येय को धारण करके सक्ति जिला के एक पाठशाला में पदस्थ सहायक शिक्षक पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप ने हैंडवाश को लेकर नई पहल की हैं।

हैंड वाश नहीं करने से उपजे स्वास्थ्य समस्या से अवगत होकर उन्होंने अपने विद्यालय में इसे सुनिश्चित करने की ठानी। उन्होंने इस संबंध में अपने अधिकारियों से बात की। अधिकारियों ने विद्यालय के संचालन निधि की सीमाएं बताकर उन्हें मना कर दिया।

उन्होंने इससे निराश हुए बिना एक नया तरीका ढूंढा। सबसे पहले उन्होंने विद्यालय के छात्रों को हैंड वॉश की लाभ-हानि को बताया। उनसे एक स्टील की थाली में हाथों को साबुन से साफ करने को कहा। इसमें ऐसा हुआ कि कई छात्रों के हाथ से काला मैल निकला और तब उन्हें समझाया कि इससे आपको नाना प्रकार की बीमारियाँ हो सकती है। इसके बाद उन्होने अभिभावक बैठक की। उन्होंने बच्चों के साथ किए गए उक्त घटना का जिक्र करते हुए उस काले मैल भरे पानी का फोटो दिखाया। उन्होंने अभिभावकों को यह समझाया कि इससे न सिर्फ बच्चा बीमार रहेगा बल्कि बीमारी होने के बाद आपकी गाढ़ी कमाई चली जाएगी। ऐसी ही चर्चा उन्होंने सरपंच और अन्य लोगों से किया और हर संभव मदद करने की अपील की। अब वे, विद्यालय में पिछले दो सालों से साबुन बैंक संचालित कर शाला प्रारंभ होने से पूर्व साबुन से बच्चों का हाथ धुलवाते हैं, ताकि वे स्वच्छ और स्वस्थ रह सकें।

उन्होंने गाँव के सभी लोगों से उनके जन्मदिन या अन्य शुभ कार्य में साबुन दान करने की बात कही, जिसे लोगों ने सहर्ष स्वीकार किया। देखते ही देखते स्कूल में एक माह के साबुन की व्यवस्था हो गयी। इस खबर को सुनकर पुष्पेंद्र के साथी शिक्षकों और साथ ही उस इलाके के लोगों ने भी कुछ राशि और साबुन देना प्रारम्भ कर दिया। इसका प्रतिफल यह रहा कि स्कूल के बच्चे भोजन और शौच के बाद साबुन से हाथ धोते हैं। शिक्षक पुष्पेन्द्र कुमार कश्यप बताते हैं कि हमारे विद्यालय में अब 5 हजार रुपये और 5 साल तक का साबुन उपलब्ध है। मेरी प्रतिज्ञा है कि हम यह काम अन्य विद्यालय के लिए भी करेंगे। इस प्रकार एक व्यक्ति के संकल्प ने एक भूभाग में हाथ धोने जैसे विषय में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- एक छोटे से प्रयोग के द्वारा बच्चों के बाल-मन में उत्सुकता जगाकर जागरूकता फैलाना।
- बच्चों के स्वास्थ्यगत विषयों को लेकर अभिभावकों से परामर्श करना।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- हाथ धोने जैसे महत्वपूर्ण विषय की अच्छी जानकारी एवं मजबूत कार्यान्वयन से भावी युवा पीढ़ी के स्वस्थ भविष्य की नींव गढ़ी।
- बच्चों को अस्वच्छता के कारण होने वाली अनेकों बीमारियों से बचाया।

सीख एवं सुझाव:

भोजन से पहले एवं शौच के पश्चात सभी को अपने हाथ साबुन से धोना चाहिए जिससे सभी अनेकों बीमारियों से बच सकते हैं और अपने तन के साथ-साथ अपने मन को भी स्वच्छ एवं सुंदर रख सकते हैं।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

समाज सेवा की नई उड़ान: सफहलता की अनूठी कहानी

स्थल: महासमुंद

संपर्क:

कार्यक्षेत्र:

- स्वच्छता
- स्वास्थ्य
- वृक्षारोपण
- सड़क सुरक्षा

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

गायत्री मिश्रा: समाज कार्य में उभरती नई उम्र की प्रेरणा

चुनौतियाँ:

- स्वच्छता , स्वास्थ्य , वृक्षारोपण एवं सड़क सुरक्षा ।
- कोविड 19 के समय टीकाकरण के लिए उदासीनता ।
- गरीब बच्चों की पढ़ाई
- बुजुर्गों की सेवा

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

महासमुंद की सरायपाली की गायत्री मिश्रा समाज कार्य के क्षेत्र में नए और प्रभावशाली चेहरे के रूप में उभरकर आई है। उत्कृष्ट कार्य के श्रृंखलाबद्ध कार्य को करने के कारण वह तेजी से देश को प्रतिनिधित्व देने वाली प्रभावशाली व्यक्तित्व की सूची में शामिल हो रही हैं। गायत्री ने कक्षा 9 वी में जब स्काउट गाइड की सदस्यता ली थी तो किसी ने नहीं सोचा था कि वह समाज सेवा को नई उड़ान देंगी। उन्होंने स्वच्छता,स्वास्थ्य,वृक्षारोपण,सड़क सुरक्षा जैसे तमाम जागरूकता की विभिन्न गतिविधि करते हुए 12वीं की पढ़ाई पूरी करने के बाद रेंजर के रूप में अपना सेवा देना प्रारंभ किया। कोविड 19 के भयावहता की परवाह किए बगैर लोगो को मास्क पहनने, हाथो की सफाई, टीकाकरण, कोविड उन्मूलन हेतु कोविड अनुकूल व्यवहारों पर लोगो को जागरूक करने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उनके उल्लेखनीय कार्य के दृष्टिगत वर्ष 2020 में *राज्यपाल पुरस्कार* के द्वारा पुरस्कृत किया गया।
इसके पश्चात वर्ष 2021 में सुश्री गायत्री ने राष्ट्रीय सेवा योजना की भी सदस्यता ली जिससे माहवारी स्वच्छता प्रबंधन, स्वास्थ्य, मतदाता जागरूकता जैसे विषयों नुक्कड़ नाटक एवं रैली में शामिल होकर लोगो को जागरूक करती रही है। लोगों में आ रहे सकारात्मक प्रभाव को देखते हुए उनके मन में समाज में बदलाव लाने एवं विकास करने हेतु वर्ष 2023 में एक सामाजिक संस्था के साथ जुड़ी, जिसमें गरीब बच्चों, महिलाओं एवं विकलांग लोगों, बुजुर्गों के लिए सेवा कार्य किया जाता है । हाल ही में उनके द्वारा घुमंतू बच्चों की पढ़ाई लिखाई की सामग्री देकर पढ़ाई करने हेतु प्रोत्साहित करके समाज कार्य को नई दिशा दी।

विकलांग बच्चों के साथ सामाजिक समरसता हेतु रक्षाबंधन त्योहार में कार्यक्रम के माध्यम से उन्हे भी स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की जानकारी प्रदान कर रही है। समाज कार्य को जीवन का अंग मानने वाली सुश्री गायत्री की भविष्य की योजना है कि वह स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता संबंधी समस्या व चुनौतियों पर अपना समय देकर कार्य करें ताकि विकास द्रुत गति से हो सके।

सीख, रणनीति एवं सुझाव

- कोविड 19 में लोगों को जागरूक किया एवं बिना अपनी फ़िक्र किए लोगो का टीकाकरण करवाया।
- स्वास्थ्य को एवं स्वच्छता को बढ़ावा दिया और इसके बारे में लोगों को जागरूक किया।
- गरीब बच्चों की पढ़ाई करवाई एवं बुजुर्गों की सेवा की।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए लोग जागरूक हुए।
- गरीब बच्चों की पढ़ाई हो पायी।
- कोविड 19 के समय लोगों का टीकाकरण हुआ।
- वृक्षारोपण का कार्य और सड़क सुरक्षा का कार्य पूरा हुआ।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

सामाजिक परिवर्तन की ध्रुव तारा बनी कलावती

स्थल: किलेपाल

संपर्क: 9301213244

कार्यक्षेत्र:

- पोषण
- गर्भवती महिलाओं का ANC जांच

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

सामाजिक परिवर्तन की ध्रुव तारा बनी कलावती

चुनौतियाँ:

- दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र में महिलाओं को दूर नहीं जाने देने की प्रवृत्ति
- आदिवासी महिलाओं में पढ़ाई के प्रति उदासीनता

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

एक तरफ जहाँ बस्तर के दूरस्थ आदिवासी क्षेत्र में महिलाओं के विकास के प्रति उदासीनता व्याप्त थी वह बस्तर के बास्तानार ब्लॉक से निकलकर दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में पहुंची सुश्री कलावती पोयाम ने नई सोच की राह प्रस्तुत करके अपने जज्बे से सभी को चौंकाया है।

यह उन दिनों की बात है जब सुश्री कलावती पोयाम के गाँव में लड़कियों को पढ़ने के प्रति उदासीनता थी। कोई महिला स्वतन्त्र होकर सामाजिक कार्यों में हिस्सा नहीं ले सकती थी। परन्तु बचपन से ही जुझारू स्वभाव की कलावती ने नई राह चुनी। पहले उसने अपने परिवार से हरेक प्रकार के विकास की चर्चा की। उसने गांव के महिलाओं के विकास की चर्चा सरपंच से की। गांव के कई प्रभावशाली बुजुर्गों ने उसका साथ दिया। इसके बाद उसने वर्ष 2020 से युवोदय स्वयंसेवक के रूप में अपना योगदान दिया। इससे उसके अंदर आत्मविश्वास का भाव जागृत हुआ। उसने पोषण, गर्भवती महिलाओं के ANC जांच पर काम किया इससे गांव में उसके प्रति एक विश्वास जगा। इस युवती की कहानी से प्रेरित होकर, विभिन्न संगठनों और सरकारी एजेंसियों के प्रतिनिधियों ने नए सोच और सामाजिक हस्तक्षेप के लिए एक साथ काम किया। देखते-ही-देखते उनकी मेहनत, संघर्ष और विश्वास ने उन्हें एक सकारात्मक परिवर्तनकारी महिला बना दिया।

दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में उसने अपने समुदाय की कथा सुनाई, तो इससे प्रेरित होकर अन्य प्रतिनिधियों ने उनकी इस संघर्ष की यात्रा को समर्थन दिया और एक स्वर में कहा कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में नई सोच की शुरुआत की।

अब कलावती का लक्ष्य युवाओं में उच्च शिक्षा के प्रति काम करना और उन्हें समाज की जिम्मेदारी निभाने के प्रति उत्साहित करना है।

सीख, रणनीति एवं सुझाव

- वनवासी क्षेत्रों में महिलाओं के शिक्षा के प्रति उदासीनता का अध्ययन।
- वनवासी क्षेत्र में महिला विकास के प्रति राज्य स्तरीय प्रभावशाली लोगों को एकजुट करना।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- सामाजिक परिवर्तन की दिशा में नई सोच की शुरुआत
- युवाओं में उच्च शिक्षा के प्रति रुचि

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

संभावना फाउंडेशन

स्थल: रायपुर

संपर्क: 7999674481

कार्यक्षेत्र:

बच्चो के नैतिक एवं
व्यवहारिक मूल्यों पर कार्य

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

ऑनलाइन से ऑफलाइन की ओर - देजा वू

चुनौतियाँ:

बच्चों का अत्यधिक ऑनलाइन मोबाइल में व्यस्त होना, जिससे उनके मानसिक एवं शारीरिक विकास में परिवर्तन

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

संस्था वर्तमान में 100 से ज्यादा बच्चों के साथ मिलकर एक कार्यशाला पर काम कर रही जो मुख्य रूप से सामाजिक व्यवहार परिवर्तन पर आधारित है। कार्यशाला बच्चो के नैतिक एवं व्यवहारिक मूल्यों पर कार्य करता है, बच्चों को सामाजिक कार्यों से जोड़ना, मानवीय संवेदना का विकास करना, ऑनलाइन से ऑफलाइन बच्चों को एक दूसरे और आस पास की दुनिया से जोड़ना, जिससे बच्चे वर्चुअल दुनिया से निकलकर वास्तविक दुनिया से जुड़ें और भविष्य में प्रत्येक जीव के प्रति सम-भाव रखते हुए संवेदनशील व्यक्तित्व एवं बेहतर नागरिक के रूप मे उभरे। इन कार्यशाला में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा, कार्य और खुलकर विचार रखने की आजादी है। हमारी कार्यशाला की सफलता की कहानी है कि अब कुछ बच्चे पूरी कार्यशाला संभालते हैं, उनमें लीडरशिप जैसे गुणों का विकास हो रहा, कुछ दिनों पहले कार्यशाला के बच्चों द्वारा एक अन्य बच्चे को पूजा सामान को तालाब में विसर्जित करते समय रोकना एवं जल प्रदूषण के विषय में जागरूक करना, हमारे कार्यशाला के सफलता का पहला कदम है।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

बच्चों में आपसी संवेदना एवं भावनात्मक जुड़ाव का विकास हुआ है। बच्चे शारीरिक गतिविधियों खेल-कुद योग-व्यायाम एवं मैडिटेशन जैसे गतिविधियों में रुचि लेते हैं और खुद ही कमान लेकर अन्य बच्चों को सिखाते हैं।

सीख, रणनीति एवं सुझाव

बेहतर समाज संवेदनात्मक नागरिकों से संभव हे जिसके लिए सामाजिक व्यवहार की समझ विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

प्रबल आधार सेवा संस्था

स्थल: जगदलपुर

संपर्क: 9179994365

कार्यक्षेत्र:

- पर्यावरण सुरक्षा
- जैव विविधता संरक्षण

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

गांव के प्रति परिवार ने उठाई पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी

चुनौतियाँ:

जैव विविधता का संरक्षण एक वैश्विक चिंता का विषय है इस पर अति संवेदनशील क्षेत्रों में जाकर लोगों को जागरूक करना

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

जैव विविधता संरक्षण व पर्यावरण सुरक्षा को लेकर संस्था द्वारा छत्तीसगढ़ में लगभग 500 ग्राम पंचायत पर कार्य किया गया। इस संस्था द्वारा बीएमसी व पीबीआर पर कार्य अति संवेदनशील क्षेत्रों में जाकर करते हुए लोगों को जागरूक किया गया। संस्था के कर्मियों द्वारा मिलकर गांव के समुदायों में क्लस्टर बैठकों में प्रति परिवार पांच पेड़ जीवंत रखना, पॉलिथीन का उपयोग नहीं करना, पॉलिथीन के विकल्प पर कार्य करना जैसे पर्यावरणीय संरक्षण के लिए पहल किए गए सभी परिवारों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अपना योगदान सुनिश्चित किया प्रति 10 क्लस्टर में बाटे क्लस्टर समूह को पांच स्वयंसेवकों द्वारा मॉनिटरिंग की जाती रही जिससे पर्यावरण संरक्षण के इस पहल को जीवंत गति मिली। संस्था द्वार किए गए इस पहल के लिए किए गए कार्य को देखते हुए वन विभाग ने भी सराहा है।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

ग्रामीण क्षेत्रों में भी जैव विविधता जीव-जंतु, कृषि-फसल, वृक्ष व जड़ी बूटियां के महत्व को समझने लगे हैं तथा इसके संरक्षण में कार्य कर रहे हैं।

सीख, रणनीति एवं सुझाव

- लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने एवं एकजुट होने के लिए सभी को प्रेरित करना
- गांव को 10 क्लस्टर में बांटना तथा प्रति परिवार पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी तय करना
- मोनिट्रिंग सिस्टम को सुदृढ़ करते हुये ऐड्वकसी पर कार्य करना

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

आसरा फाउंडेशन

स्थल: महासमुंद

संपर्क:

कार्यक्षेत्र:

- महिला सशक्तिकरण
- नशा मुक्ति
- बेरोजगारी
- शिक्षा

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

महिला समूह अपने गाँव-घर को नशे से कर रही मुक्त

चुनौतियाँ:

- गरीबी
- बेरोजगारी
- अशिक्षा

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

आसरा फाउंडेशन समाज को जागरूक करने के लिए प्रयासरत है। महिला सशक्तिकरण के प्रति प्रतिबद्ध एवं समाज, परिवार, गांव, युवा पीढ़ी को नशे से बचाने के लिए नशा मुक्ति का अभियान 2015 से निशुल्क भावना से चलाया जा रहा था, जिसमें किसी भी प्रकार का सहयोग शासन प्रशासन से नहीं लिया। नशा मुक्त हो मेरा क्षेत्र इस ध्येय की तैयारी लगातार संस्था करती रही। इसके लिए घर-घर महिलाओं को उत्साहित किया गया। गांव में महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की मदद से नशा मुक्ति के बारे में बता कर गांव-गांव में अभियान चलाने के लिए जागरूकता लगातार होती रही, इस बीच 2022 के दिवाली में इसे जन-आंदोलन का रूप देकर संस्था ने बहुत बड़ी योजना तैयार कर गांवों में अवैध रूप से चल रहे शराब की दुकानों को महिला समूह के द्वारा पूर्ण रूप से बंद करवाया।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- नशा मुक्ति अभियान एवं जन संपर्क से लोगों को जागरूक करना।
- समाज को नशे जैसी लत से मुक्ति की ओर आगे बढ़ाकर एक स्वस्थ समाज की नींव तैयार करना।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- संस्था के प्रयासों के बाद कार्य क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में लोग नशे की लत से दूर होने की दिशा में प्रयास करने लगे है।
- अवैध रूप से हो रहे शराब की बिक्री को रोकने महिला समूह आगे आ रही है।

सीख एवं सुझाव:

बेहतर परिणाम के लिए गांव की महिलाओं एवं युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर आगामी समय में लगातार प्रशिक्षित करना।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

निदान शिक्षण एवं शोध संस्थान

स्थल: सक्ती

संपर्क: 8827675726

कार्यक्षेत्र:

दिव्यांगजन

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

दिव्यांगजनों के समस्या का समाधान करती है निदान, जीवन का राह बनाती है आसान।

चुनौतियाँ:

- दिव्यांगजनों का प्रमाण पत्र, यूनिक आईडी नहीं बन पाना।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी व लाभ नहीं मिल पाना।
- दिव्यांगजनों का जॉब कार्ड नहीं बन पाना व काम नहीं मिल पाना।
- दिव्यांगजनों को पेंशन नहीं मिल पाना।
- दिव्यांगजनों द्वारा आजीविका के लिए / लोन के लिए इधर उधर भटकना।

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

डभरा ब्लाक नवीन जिला सक्ती से 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सक्ती नवीन जिला होने के कारण दिव्यांगजनों को प्रमाण पत्र बनवाने के लिये 90 किलोमीटर सफर तय कर जांजगीर मुख्यालय जाना पड़ता था। संस्था द्वारा 2018 से डभरा ब्लाक के 25 गांवों में व 2019 से मालखरौदा ब्लाक के 5 गांवों में दिव्यांगजनों को संगठित किया। इन दिव्यांगजनों को पंचायती राज, ग्राम सभा में भागीदारी बढ़ान, उनके अधिकारों के प्रति उन्मुख करने हेतु जनसंपर्क, बैठक, प्रशिक्षण, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर पम्पलेट, दीवार लेखन, आजीविका प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी दी गई। इसी तरीके से अभी तक संस्था द्वारा 25 गांव में ग्राम स्तरीय दिव्यांग जन संगठन का गठन किया गया। इसी क्रम मे डभरा ब्लाक में ब्लाक स्तरीय दिव्यांग जन संगठन का गठन किया गया। दिव्यांगजनों के अधिकारों व शासकीय योजनाओं के बीच क्रियान्वयन व बेहतर जीवन मे सुधार के लिए बधाइयों का तांता लगा रहा

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- दिव्यांगजन स्वयं एक दूसरे का सहयोग कर रहे हैं।
- दिव्यांगजन एक साथ मिलकर प्रमाण पत्र बनवाने जाते हैं।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- 25 गांव के दिव्यांगजनों में नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ।
- 20 गांव के दिव्यांगजनों का डी पी ओ गठन व क्षमता विकास हुआ।
- ब्लाक स्तर पर डी पी ओ गठन हुआ, जिसमें ब्लाक स्तर के शासकीय कर्मचारियों से संवाद करने हेतु प्लेटफार्म तैयार हुआ।
- 260 दिव्यांगजनों का दिव्यांग प्रमाण पत्र बना।
- 12 दिव्यांगजनों को रोजगार गारंटी में काम मिला।
- 17 दिव्यांगजनों द्वारा आजीविका प्रारंभ किया गया।

सीख एवं सुझाव:

बेहतर परिणाम के लिए गांव की महिलाओं एवं युवा पीढ़ी को प्रशिक्षण, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर आगामी समय में लगातार प्रशिक्षित करना।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

सृजन सामाजिक संस्था

स्थल: राजनांदगांव

संपर्क: 9827173727

कार्यक्षेत्र:

बाल सुरक्षा एवं शिक्षा

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

सहज सहयोग से उत्पीड़न का शिकार बच्चा हुआ खुशहाल

चुनौतियाँ:

- सख्त और पेचीदा कानूनी कार्रवाई से बाल यौन उत्पीड़न का रजिस्टर नहीं होना।
- इससे आपराधिक तत्वों के मनोबल से अपराध बढ़ना।

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

राजनांदगांव जिले के एक गांव का एक बालक आशु (बदला हुआ नाम) जो पढ़ाई में बेहद होशियार था। वह अपने माता पिता के साथ ही रहता था, इस बालक के पिता चूंकि एक ऐसे पेशे से जुड़े थे जिसके कारण उन्हें प्रायः बाहर ही रहना पड़ता था। बालक घर पर कम और अपने दोस्तों के साथ बाहर ज्यादा खेलता था।

इस परिवार के पड़ोस में ही एक बुजुर्ग दंपत्ति रहते थे। जिनकी अपनी कोई संतान नहीं थी। ये दंपत्ति आशु को बहुत प्यार करते थे और प्रायः महंगे-महंगे उपहार देने से वे आशु के परिवार के साथ घुलमिल गए। आशु भी अब उस बुजुर्ग दंपत्ति के घर पर ही ज्यादा समय व्यतीत करता था।

कुछ दिन बाद आशु पहले की अपेक्षा गुमसुम रहने लगा। वह डरता था और पढ़ाई से दूर होने लगा।

एक दिन आशु के पापा उसकी मोबाईल में आशु की कुछ आपत्तिजनक फोटो देखी। तब उन्होंने आशु को समझाया और बात घर पर ही रहे ऐसा कहते हुए बात को दबा दिया।

इसी बीच उस गांव में सृजन सामाजिक संस्था की टीम ने यौन उत्पीडन पर एक कार्यक्रम मे बच्चे के साथ कोई लैंगिक उत्पीड़न या हमला होने पर संस्था को बताने और कानूनी सलाह देने की बात की। संस्था ने यह बताया कि ऐसी घटना पर सबसे छुपाएं परंतु संस्था के सदस्य को जरूर बताएं क्योंकि आपकी बात गुप्त रहेगी। कार्यक्रम में शामिल आशु के माता-पिता ने संपर्क किया। उन्हे संस्था ने नई तकनीक के अनुसार व्यवहार संबंधी कुछ बातें करके सहज किया, सारी जानकारी ली।

आशु से बात की, उसकी काउंसलिंग की तब यह बात सामने आई कि वह बुजुर्ग दंपत्ति के अंकल पिछले लगभग 3 वर्षों से आशु का लैंगिक शोषण कर रहे हैं।
इसके बाद संस्था द्वारा उक्त व्यक्ति के विरुद्ध POCSO एक्ट के तहत मामला दर्ज करवाया गया। आज उक्त व्यक्ति जेल में बंद है जबकि आशु सामान्य तरह पढ़ाई कर रहा है और अब वह इस ट्रामा से भी बाहर आ चुका है।
इस प्रकार ऐसे आपराधिक मामले दर्ज हो रहे हैं और आरोपी पर कार्यवाई प्रारंभ हुआ है।
संस्था के स्वयं के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2023 में विगत 12 वर्ष में प्रत्येक वर्ष के 12 माह में औसतन महज 51 मामले दर्ज होते थे, परंतु व्यवहार विज्ञान के इस्तेमाल से वर्ष 2024 में मात्र 4 माह में ही 88 मामले दर्ज हुए। इससे एक आशातीत सफलता मिलनी प्रारंभ हुई है।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- परिवार के बीच पहुंचना, सहजता का भाव रखना और जागरूक करना
- प्रशिक्षण - स्टेक होल्डर्स का नियमित प्रशिक्षण आयोजित करना। चाइल्ड लाइन, बाल आयोग के संबंध में जानकारी प्रदान करना।
- विभिन्न नजिंग टूल्स (दोस्ती कार्यक्रम, फ्रेण्डशिप बैण्ड, हस्ताक्षर अभियान, चाइल्ड ग्रुप, प्ले, बच्चों के साथ विभिन्न कार्यालयों, पुलिस थानों का भ्रमण, प्ले ग्राउण्ड एक्टिविटी, फिल्म का प्रदर्शन आदि) का प्रयोग कर लोगों के बीच पहुंच बनाकर उन्हें सहज किया ताकि बच्चों से जुड़े मामले सामने आयें।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- सृजन सामाजिक संस्था द्वारा लगातार बाल अधिकार एवं संरक्षण के क्षेत्र में सक्रिय रूप से लोगों के आशा का केंद्र बता जा रहा है।
- लोगों में लैंगिक उत्पीड़न से बालकों का संरक्षण अधिनियम (पाक्सो) के नियमों की जानकारी मिली ।
- बाल संरक्षण के प्रति लोगों में ज़िम्मेदारी का एहसास हो रहा है जो जन-आंदोलन का रूप ले रहा है ।

सीख एवं सुझाव:

- अब एक समझ विकसित हुई कि सिर्फ कानूनी प्रक्रिया के पालन से यौन उत्पीड़न नहीं रुक सकता, इसके लिए लोगों में सहज भाव का जागरण अधिक प्रभावी है।
- सख्त रूप अपनाने से बेहतर नज के सहज और सॉफ्ट भाव से संचार विकसित करने से व्यवहार परिवर्तन की बहुत ही मनोरंजक गतिविधि मिलती

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

आस्था समिति

स्थल: पंडरिया

संपर्क:9893182264

कार्यक्षेत्र:

ग्रामीण विकास

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

आस्था समिति: एक सफलता की कहानी

चुनौतियाँ:

स्वरोजगार के प्रति कौशल एवं सुविधाओं का अभाव और साथ ही जागरूकता की कमी।

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

ग्राम बोहिल एवं आगरपानी नामक स्थान पर, आस्था समिति ने किचन गार्डन और आजीविका का कार्य किया। इसके बाद, सुकरसिंह बैगा ने किचन गार्डन और आजीविका के बारे में जानकारी प्राप्त की। समिति ने उन्हें पाइप और पानी टंकी भी प्रदान की, जिससे कि उन्हें पानी की कमी का सामना नहीं करना पड़े।

इसके अलावा, समिति ने उन्हें बकरी पालन के लिए प्रशिक्षण भी दिया। उन्हें अन्य स्थानों के भी एक्सपोजर दिया गया, जिससे कि उनकी ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ा।

आज, सुकरसिंह बैगा अपने घर के बागीचे में हरे-भरे सब्जियाँ उगाते हैं और उनकी आजीविका हेतु बकरी पालते हैं। उनके पास वर्तमान में 12 बकरियाँ और 6 बकरे हैं, और वर्ष में उन्हें लगभग 1 लाख 50 हजार की कमाई होती है।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

बकरी पालन के लिए प्रशिक्षण भी दिया, उन्हें अन्य स्थानों के भी एक्सपोजर दिया गया, जिससे कि उनकी ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ा।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- इस सफलता के कारण, अब गाँव के लोग स्वयं ही किचन गार्डन आदि का निर्माण कर रहे हैं। इससे इस कार्य के प्रति गाँव का इको सिस्टम (पारिस्थितिक तंत्र) बेहतर हुआ है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और वे स्वावलंबी बनने की राह पर है।

सीख एवं सुझाव:

- पोषण को सुदृढ़ करने के लिए घर पर पोषक तत्व की प्रचुरता से व्यक्ति का दृष्टिकोण पोशाक आहार के प्रति साकारात्मक हों जाता है।
- गाँव के लोगों में पोषक आहार की कमी का अध्ययन करके उसके अनुसार रणनीति का निर्माण करना बेहतर परिणाम देनेवाला साबित हो सकता है।

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

प्रांतीय ग्रामीण विकास संस्थान

स्थल: पेंडरा रोड

संपर्क: 6260366552

कार्यक्षेत्र:

- महिला सशक्तिकरण
- पर्यावरण संरक्षण
- बच्चों की शिक्षा

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change Chhattisgarh | unicef for every child

शिक्षा, सशक्तिकरण, और पर्यावरण संरक्षण के माध्यम से समृद्ध ग्रामीण समाज का निर्माण

चुनौतियाँ:

- बच्चों की शिक्षा
- महिला सशक्तिकरण
- पर्यावरण संरक्षण
- बच्चों को श्रमिक मुक्त करना

सफलता की कहानी एवं परिणाम (प्रसंग):

प्रांतीय ग्रामीण विकास संस्थान एक समाजसेवी संगठन है। संगठन के सदस्यों ने ग्रामीण जनजीवन, बाल श्रम उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण एवं पर्यावरण संरक्षण को अपना ध्येय बनाया है।

इस हेतु बाल श्रमिक बच्चों के बीच खेल-खेल में बच्चों को शिक्षा एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना पर्यावरण संरक्षण के प्रयास में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु आंवला नवमी का पर्व के रूप में समाज के बीच स्वीकार्य बनाने का प्रयास करना अपना योगदान दिया ।

पर्यावरण संरक्षण हेतु सामान्य जनमानस एवं प्रशासकीय सेवकोंसे भी निरंतर प्रयास किया जा रहा है। फलस्वरूप बाल श्रम में बहुत ही कमी आई, कुछ गांव बाल श्रमिक मुक्त हुए तथा वृक्षों की कटाई में भी बहुत ही ज्यादा अंकुश लगा है । इससे अब हर वर्ष बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण किया जा रहा है।

रणनीतियाँ एवं कार्रवाई:

- बच्चों की शिक्षा के लिए योगदान दिया और समाज को शिक्षा के प्रति जागरूक किया।
- महिलाओं को समाज में जगह दिलाई, समाज में महिला सशक्तिकरण के लिए काम किया।

आपके कार्यों से समाज में बदलाव (मुख्य उपलब्धियाँ):

- बच्चों को खेल एवं शिक्षा के लिए जागरूक किया।
- समाज के लोगों में महिला सशक्तिकरण के लिए जागरूकता आई।
- पर्यावरण की सुरक्षा का कार्य हुआ और समाज में इस विषय के प्रति जागरूकता आई।

सीख एवं सुझाव:

- पर्यावरण संरक्षण स्वयं की जिम्मेदारी

#ChhattisgarhABC

#SBCWorks

Alliance for Behaviour Change
Chhattisgarh

unicef
for every child